.Indian J. Soc. & Pol. 09 (01) :133-134 : 2022
31 JANUARY 2022

ISSN: 2348-0084 (PRINT)
ISSN: 2455-2127(ONLINE)

पुस्तक समीक्षा : ***मंजिलें.. और भी, डॉ0 शशिकला जायसवाल,*** एशियन प्रेस, कोलकाता, 2021, पृ0142, ISBN 978.93.90970.17.9 रू0250

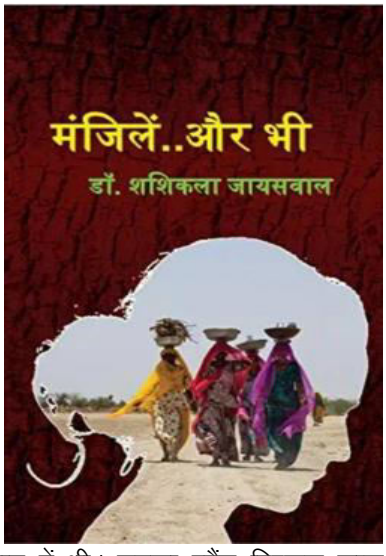

प्रेमी को प्रेमी मिले सब विष अमृत होय

निरंजन कुमार यादव[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी, राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गाजीपुर, उ0प्र0, भारत

जब समाज द्वारा तय किए गए विधानो से जीवन दूभर हो जाए तो जीवन खत्म नहीं हो जाया करता ; वहां से जीवन की एक नई धार प्रस्फुटित होती है, जिसमें पहले की अपेक्षा अधिक ऊर्जा होती है। यह अपने वेग से पथ में आने वाली रूढ़ियों को या तो किनारे कर देती है या उसे अपने में समाहित कर आगे बढ़ जाती है। ठहरे जीवन की अपेक्षा गतिशील जीवन में संभावनाएं अधिक होती है। जीवन में नए रास्ते पर चलना और नया पथ बनाना बहुत जोखिम का कार्य होता है। यह बहुत धैर्य एवं साहस का काम है। इसी धैर्य एवं साहस की कहानी है– 'मंजिलें..और भी'। यह डॉ0शशि कला जायसवाल का प्रथम उपन्यास है। लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से इस बात को बहुत करीने से रखा है कि –'परंपरागत समाज द्वारा तय किए गए स्त्रियों की मंजिलें जब नारकीय हो जाएं, तो उन्हें उस नर्क को स्वीकार करने, उसमें मर – खपने के बजाय, उससे बाहर निकल जाना चाहिए । अपने जीवन से निराश और हताश मनुष्य की मंजिल मृत्यु नहीं होती, जब तक जीवन है तब तक मंजिलें ..और भी हैं।

'मंजिलें और भी' उपन्यास कुल 142 पृष्ठों का है । यह 18 भागों में बंटा हुआ है। इसका कलेवर बहुत ही सामान्य है। 21वीं सदी के दूसरे दशक में इस कलेवर के उपन्यास खूब प्रकाशित भी हुए हैं और लोकप्रिय भी रहे हैं। उदाहरण के रूप में हम काशीनाथ सिंह की कृति 'महुआ चरित' और शिव मूर्ति का 'कूच्ची का कानून' को इस रूप में देख सकते हैं। इसके पूर्व इस कलेवर में उदय प्रकाश जी जैसे लेखकों की कहानियां प्रकाशित हुआ करती थीं। हम सबको याद ही होगा कि 'पीली छतरी वाली लड़की' और 'मोहनदास इसी कलेवर की कहानियां हैं। अब भी इस कलेवर में तद्भव पत्रिका की कहानियां प्रकशित होती हैं। काशीनाथ सिंह जी की 'महुआ चरित ' पहले पहले तद्भव पत्रिका में कहानी के रूप में ही प्रकाशित हुई थी लेकिन बाद में जब वह पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित हुई तो वह उपन्यास के रूप में प्रकाशित हुई । खैर प्रकाशन तो बाजार के अनुकूल ही हुआ करते हैं। इसलिए अब पुस्तकों पर विधा लेखन की परंपरा लगभग खत्म होती जा रही है । अब यह पाठकों को ही तय करना है कि वह रचना को किस रूप में पढ़ते हैं, लेकिन लेखिका के साथ कोई रचनात्मक दुविधा नहीं है । वह जितनी अपने जीवन में साफगोई बरतती हैं, उतनी ही लेखन में भी। उनका स्टैंड बिल्कुल साफ है । उपन्यास की शुरुआत ही वह इस बात से करती है कि– ''...नारी के लिए पुरुष का संरक्षण आवश्यक है इस बात की पुष्टि क्या ईश्वर ने स्वयं आकर की है? रक्षक भले ही भक्षक बन जाए लेकिन उसके अधिकार को बनाए रखते हुए स्वयं को पिसने देना चाहिए। यह नियम समाज द्वारा स्त्रियों के लिए रची गई उस साजिश का नाम है जिसके तहत वह स्त्रियों के ऊपर समय–समय पर अपने प्रभुत्व का प्रदर्शन कर सके। अगर नारी पुरुष के बिना अधूरी है तो पुरुष नारी के बिना अस्तित्वहीन है। इस बात का एहसास उसे दिलाना ही होगा । वरना इस आधी आबादी का अस्तित्व आधा भी न रह जाएगा।'' इस कथन के माध्यम से स्पष्ट हो जाता है कि लेखिका सहकार की जबरदस्त पैरोकार है। स्त्री और पुरुष को भिन्न दृष्टिकोण से देखने के पक्ष में नहीं है । दोनों का अस्तित्व एक जैसा हैं । दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। कोई किसी से हीन या श्रेष्ठ नहीं है, तो फिर यह समाज में विडंबना क्यों है कि स्त्री के जीवन में ही लगातार शोषण का चक्र चलता रहता है। उसके पास ही आखिर क्यों कर्तव्यों का पहाड़ रहता है? इन्ही सवालों के जवाब में इस कथा का सृजन होता गया है। जब शास्त्रों में, विधानों में स्त्री को आधे (यानी एक के बराबर दूसरा) के रूप में स्वीकृति मिली हुई है तब आखिर क्यों उसके पास अपने जीवन का हक नहीं है? इसी हक की कहानी है– 'मंजिलें.. और भी'।

'मंजिलें ..और भी' आधी आबादी की बर्बाद जिंदगी को पुनः आबाद करने की कहानी है। इसके कथानक के केंद्र में 'श्रद्धा' और 'प्रीतेश' हैं । यह दोनों अपने वैवाहिक जीवन से असंतुष्ट हैं। विसंगतियां इनके जीवन में कदम कदम पर हैं। जिससे जीवन में निराशा और अवसाद ने घर बना लिया है, लेकिन श्रद्धा का आत्मविश्वास उसे कभी भी अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। उधर 'प्रीतेश' का हंसमुख मिजाज उसके जीवन

1: Corresponding Author

के वास्तविक पक्ष के एकदम विपरीत है। ज्योंही दोनों एक दूसरे के करीब आते हैं, उनका दुख सभी परतों को तोड़कर बाहर आ जाता है। अज्ञेय कहते हैं कि –'दुख सबको मांजता है' । यह बात कितनी सही है, इसे समाज जानता है, लेकिन यह बात सर्वविदित है कि दुख दुनिया को जोड़ता बहुत तेजी से है । इस सन्दर्भ में कबीर कहते हैं कि – 'दुखिया को दुखिया मिले, सब विष अमृत होय'। प्रेम वह अमृत है जहां जीवन के सभी विष महत्वहीन हो जाते है। अपनी पहली ही मुलाकात में 'श्रद्धा' और 'प्रीतेश' एक दूसरे के समक्ष अपने अपने हृदय को खोल कर रख देते हैं । जिससे उनके मन में दबी प्रेम की धार प्रस्फुटित हो, निर्बाध बहनें लगती है। दोनों अपने जीवन में जैसे जीवन साथी की कल्पना करते हैं, उसे वह एक दूसरे में पाते ही,समाज की जकड़बंदी से मुक्त होने का फैसला लेते हैं। और समाज की रूढ़िगत मान्यताओं को पीछे छोड़कर, सुखी जीवन का चयन करते हैं। दोनों पात्र शिक्षित हैं। वे पेशे से शिक्षक हैं। इसलिए भी यह कृति पठनीय है। इसके समानांतर दो अन्य कथा और चलती है जिसके केंद्र में स्नेहा, सुनील, मिताली, डॉ फरहान रिजवी है। इनके जीवन में भी आए विडंबना बोध को 'श्रद्धा' और 'प्रीतेश' अपनी सूझ बूझ से दूर कर करते हैं।

पात्रों के जीवन चरित के माध्यम से लेखिका, समाज और व्यवस्था की विडंबनाओं को जगह जगह उजागर करती गई है । जाति, धर्म एवं शिक्षा व्यवस्था की जड़ता को प्राचार्य और डॉक्टर रिजवी के माध्यम से खोल कर रख दिया है। वह बताती है कि ज्ञान का ढोल पीटने वाले कैसे अपने मूल में 'जड़' बने रहते हैं। आदर्शों की बात करने वाले कैसे अपने जीवन में आदर्श से मुकर जाते हैं । डॉ शशिकला के इस उपन्यास की एक विशेषता यह भी है कि इसमें लेखक की उपस्थिति बहुत कम है। यदि कहीं है भी तो वह सूक्ति रूप में है। वैचारिकता का बोझ इस उपन्यास को पढ़ते हुए पाठक को नहीं ढोना पड़ता है, बल्कि पाठक सहज रूप में उपन्यास को पढ़ते हुए अपनी वैचारिकी निर्मित करते हुए इसका रस लेता रहता है। कथा के क्षेत्र में यह लेखिका का प्रथम प्रयास है। इसलिए कहीं–कहीं कुछ भाषा संबंधी शीथिलता खटकती है। भाषा की जिस कसावट की यह उपन्यास मांग कर रहा है,उसकी कमी कहीं कहीं महसूस होती है, लेकिन इस उपन्यास का कथानक इतना सहज एवं सपाट है कि पाठक को इसके व्यवधान का अहसास ही नहीं होता है। कुल मिलाकर 'मंजिलें .. और भी' साहित्य के विद्यार्थियों के लिए ही नहीं, जीवन में झंझावात के किसी भी दौर से गुजर रहे किसी सामान्य व्यक्ति के लिए भी पठनीय है।

———डॉ. निरंजन कुमार यादव